International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 380-382

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में निम्न वर्ग

सुरेन्द्र
शोधछात्र, इतिहास विभाग, म.द.वि. रोहतक हरियाणा, भारत।

सारांश
मध्यकाल में शासक वर्ग सबसे महत्वपूर्ण वर्ग था, जिसके हाथ में सम्पूर्ण शासन की बागडोर थी। जनसाधारण का जीवनयापन कठिनाई से होता था जबकि अमीर वर्ग पहले की तुलना में धनवान ही होते जाते थे। निम्न वर्ग या जनसाधारण एक तरह से शासक वर्ग की सेवा के लिए था। कस्बों और नगरों में रहने वाले निम्न श्रेणी के लोगों तथा कृषकों की ऐसी ही स्थिति भी जैसे आधुनिक समय में है। ये लोग आज के मजदूरों की तरह झोपड़ियों में रहते थे और सारे दिन परिश्रम करते थे। मध्यकाल में निम्न वर्ग या जनसाधारण के जीवनयापन, उनके मनोरंजन, सामाजिक स्थिति आदि को इस शोध–पत्र में दिखाने का प्रयास करेंगे।

मुख्य शब्द : दयनीय, निम्न वर्ग, मिट्टी, चित्रण, कारीगर, छप्पर।

प्रस्तावना

शासक वर्ग व मध्यम वर्ग के अलावा एक वर्ग वह भी होता है जिसे सामान्य व्यक्तियों का वर्ग या निम्न वर्ग कह सकते हैं। इस वर्ग में मुख्यतः कारीगर, दुकानदार, छोटे व्यापारी, किसान और मजदूर लोग आते हैं। सम्पूर्ण मध्यकाल में इस वर्ग की दशा प्रायः दयनीय रही थी। डॉ. यूसुफ हुसैन ने लिखा है, 'कस्बों और नगरों में रहने वाले निम्न श्रेणी के लोगों तथा कृषकों की ऐसी ही स्थिति भी जैसे आधुनिक समय में है। जहां तक उनके निवास स्थान का संबंध है अधिकतर विदेशी यात्री उनकी दुर्दशा का चित्रण करते थे। कृषक और श्रमिक वर्ग के लोग प्रायः छप्पर की झोपड़ियों में रहते थे।[1] पैलसर्ट ने भी इस वर्ग की स्थिति का जो चित्रण किया है वह दया उत्पन्न करने वाला है। उन्होंने लिखा है कि 'उनके मकान मिट्टी के बने हुए छप्पर की छतों के हैं। कुछ मिट्टी के घड़ों, पकाने के बर्तनों और दो चारपायों के अतिरिक्त उनके घरों में साज–सज्जा की सामग्री या तो बहुत कम है या बिल्कुल नहीं है। उनके बिछौने बहुत कम हैं – केवल एक या दो, संभवतः दो चादरें हैं जिनमें से एक बिछाने और दूसरे ओढ़ने के काम आती हैं। ग्रीष्म ऋतु के लिए ये काफी है, किन्तु कड़ाके के जाड़ों की रातें वस्तुतः दयनीय होती हैं।'[2] इसी प्रकार डॉ. आशीर्वादीलाल के द्वारा किया गया वर्णन भी गरीब वर्ग की दयनीय स्थिति का ही बोध कराता है। उनका कथन है 'निम्न श्रेणी के मनुष्य इतने निर्धन थे कि वे साधारण सुख–सुविधा का उपभोग ही नहीं कर सकते थे। ये लोग आज के मजदूरों की तरह झोपड़ियों में रहते थे और सारे दिन परिश्रम करते थे। इन लोगों के पास जीवनोपयोगी वस्तुएं भी बहुत कम थीं।'[3]

अमीर और सामन्त लोग गरीबों से बेगार भी लेते थे। उन्हें कड़ा परिश्रम करना पड़ता था। बहुत से व्यक्तियों को तो जीवित रहने भर के लिए भोजन सामग्री उपलब्ध हो पाती थी और बहुतों के पास शरीर ढकने के लिए पर्याप्त वस्त्र नहीं होते थे। सर टामस रो ने वर्णन किया है कि 'भारतवर्ष में बड़े छोटों को लूटते हैं और बादशाह सबको लूटता है। साधारण व्यक्तियों के लिए शिक्षा की उचित व्यवस्था नहीं थी। बाजार में भांग, मदिरा तथा अन्य मादक वस्तुए उपलबध थीं परन्तु गरीब लोग उनका बहुत ही कम उपयोग कर पाते थे।'[4]

अकबर के समय में किसानों आदि के प्रति कुछ ध्यान दिया गया था। उस समय सरकारी कर्मचारी बरीब जनता के साथ कठोरता का व्यवहार नहीं कर सकते थे। शाहजहां के शासन के अनितम चरण में प्रान्तीय गवर्नरों तथा अन्य पदाधिकारियों ने किसानों को कष्ट देना शुरू कर दिया था। औरंगजेब के शासनकाल में जनसाधारण की स्थिति अत्यन्त खराब हो गयी थी। उसके समय में कृषि और अन्य कारोबार पिछड़ गये थे। गरीब दस्तकारों तथा कारीगरों की दुर्दशा के बारे में बर्नियर ने लिखा है 'यदि कलाकारों तथा कारीगरों को प्रोत्साहन दिया जाता तो लाभप्रद तथा ललित कला की उन्नति हुई होती, परन्तु ये अभागे तिरस्कृत ही रहे। इनके साथ कठोरता का व्यवहार किया जाता और इन्हें इनके परिश्रम के लिए पर्याप्त मजदूर भी नहीं दी जाती। धनीमानी लोगों को प्रत्येक वस्तु सस्ते मूल्य पर मिल जाती है। जब कभी भी एक अमीर अथवा मनसबदार को किसी कारीगर की सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है तो यह उसको बाजार से पकड़ बुलाता है और बलपूर्वक उस निर्धन व्यक्ति से काम लेता है। कार्य के समाप्त हो जाने पर वह कठोर स्वामी उसकी मजदूरी उसे उसके परिश्रम के अनुसार न देकर अपनी इच्छा से देता है। इसके विपरीत एक कारीगर अपने परिश्रम के बदले कोड़े की सजा न मिलने में ही भाग्य मानकर दी हुई मजदूरी से संतोष कर लेता है।'[5]

सल्तनत काल में सुल्तानों ने उन मुसलमानों को, जिनके पूर्वज पहले हिन्दु थे, सम्मान और सुविधाएं नहीं दी थीं। छोटी जाति के बहुत से हिन्दुओं ने लालच तथा अन्य कारणों से धर्म–परिवर्तन कर इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। ऐसे व्यक्तियों की दशा भी खराब थी। गुलाम वंश के अधिकतर सुल्तान इन मुसलमानों से घृणा करते थे। जब मंगोलों को सफलता मिल गई और तुर्कों का भारत में आना बन्द हो गया तब इन गरीब मुसलमानों की ओर सुल्तानों के कुछ ध्यान देना आरम्भ किया था। इससे पहले उनके साथ बहुत ही पक्षपातपूर्ण व्यवहार किया जाता रहा था। यह स्थिति अलाउद्दीन के समय तक बनी रही थी। इस संबंध में डॉ. आशीर्वादीलाल ने लिखा है, 'तुर्क जाति विभेद की नीति में विश्वास करती थी और इसलिए उन्होंने भारतीय मुसलमानों तक को अपनी शक्तियों से ही नहीं अपनी सरकारी नौकरियों तक से वंचित कर

रखा था। कुतुबुद्दीन ऐबक से लेकर कैकुबाद तक सल्तनत की यही कठोरनीति रही कि प्रशासन की सत्ता पर तुर्कों का ही एकाधिकार बना रहे और बलबन तो खुल रूप में निम्नवंशीय अंतुकों से नफरत करता था।[6] इल्तुतमिश ने भी भारतीय मुसलमानों को उच्च पद तक नहीं पहुंचने दिया था।

जब मुसलमानों के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता था तब हिन्दुओं के साथ किये जाने वाले व्यवहार के बारे में अनुमान तो लगाया ही जा सकता है। तुर्कों ने भारतीय मुसलमानों तथा हिन्दुओं के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया था। हिन्दुओं पर तो उन्होंने बड़े अत्याचार किये थे। बहुत से हिन्दुओं के साथ दासों का सा व्यवहार किया जाता था। तैमूर ने एक लाख हिन्दू बन्दी बनाकर कत्ल करवा दिये थे। हिन्दुओं के लिए सरकारी और गैर–सरकारी पदों के द्वार बन्द थे। इतिहासकार बर्नी ने गरीब हिन्दुओं की स्थिति का बड़ा ही दयनीयतापूर्ण वर्णन किया है।[7]

उलाउद्दीन के शासनकाल में किसानों, मजदूरों और गरीब व्यक्तियों को बड़े कष्टों का सामना करना पड़ा। उनके ऊपर अपनेक प्रकार के कर और बन्धन लगाए गए थे। इनके परिणामस्वरूप हिन्दू लोगों की स्थिति बद से बदतर हो गई। हिन्दू स्त्रियों को मुसलमानों के घर सेवा कार्य करने के लिए विवश होना पड़ता था जैसे कि बर्नी के वर्णन से भी स्पष्ट है। तुर्कों के शासन काल में हिन्दुओं को पूर्ण नागरिकता का भी अधिकार नहीं दिया गया था। उन्हें काफिर कहा जाता था और उनसे घृणा की जाती थी। ऐसी स्थिति में उनकी अच्छी दशा की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

ऊपर के वर्णन से सामान्य लोगों की आर्थिक दशा का अनुमान लगाया जा सकता है। ऐसी स्थिति में वे गरीब व्यक्ति अच्छे और कीमती वस्त्राीूषण कैसे धारण कर सकते थे। मजदूर, कलाकार और कुम्हार आदि सूती लंगोट पहनते थे जो कमर से घुटनों तक जाता था। बाबर की आमकथा के वर्णन से यही ज्ञात होता है। डॉ. अशरफ ने लिखा है कि 'साधारणतया दरिद्र लोग एक धोती या कम से नीचे कपडत्रे का लम्बा टुकड़ा और कभी एक चोगा पहनते थे। ब्राह्मण लोग कमर के ऊपर वस्त्रहीन रहते थे, अपने शरीर पर जनेऊ डाले रहते थे।' अबुलफजल ने सर्वसाधारण के पहनावे के बारे में वर्णन करते हुए बताया है कि 'बंगाल के स्त्री–पुरुष धोती के अलावा कुछ नहीं पहनते थे।' फरिश्ता के अनुसार दक्षिण की स्त्रीयां कपड़े पहनने के प्रति अधिक सजग नहीं थीं। निर्धन उड़िया स्त्रियां अपने शरीर को प्रायः पत्तियों से ढकती थी। अंगिया एक ऐसा वस्त्र था जिसे अमीर और गरीब दोनों ही धारण करती थीं। गरीब स्त्रियां साड़ी भी पहनती थी। ज्यादातर मुसलमान महिलाएं करता–पाजामा पहनती थी।[8]

गरीब व्यक्तियों के आभूषण उच्च वर्ग के लोगों के कीमती आभूषणों जैसे नहीं होते थे। उनके आभूषण सोने–चांदी के अलावा अन्य साधारण धातुओं के होते थे। इतना जरूर है कि मध्यकाल में भी गरीब व्यक्ति भी आभूषणप्रिय थे।

जनसाधानण की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। परिणामस्वरूप वे उच्च या मध्यम वर्ग के व्यक्तियों की भांति उत्तम कोटि का भोजन नहीं कर पाते थे। जैसे–तैसे अपना जीवन–निर्वाह करना ही उनका अभीप्सित था। उत्तर भारत के निवासी चपाती या रोटी काप्रयोग करते थे और दक्षिण के निवासी मुख्यता चावल–दाल का। गुजराती लोग दही और चावल का भोजन करते थे। अबुल फजल के अनुसार गरीब व्यक्ति प्रातःकाल भुने और पिसे बाजरे के सत्तू खाते थे और बहुत से लोग खिचड़ी खाते थे। खिचड़ी की चर्चा अनेक इतिहासकारों तथा यात्रियों ने की है। बहुत से गरीब लोग भी भोजनोपरान्त पान खाते थे। मुसलमान भोजन में मांस का भी उपयोग करते थे। हिन्दुओं में राजपूत लोग ही मांस का उपयोग करते थे।[9]

निम्न वर्ग के लोग शासक वर्ग की तरह अनेक विवाह करके विलासिता का निर्वाह करने में असमर्थ थे। वे एक विवाह करते थे और आपस में तलाक भी लेते थे। डेलावेले का मत भी ऐसा ही है। मण्डलसो, हेमील्टन तथा स्टेवोरिनस ने भी इसका समर्थन किया है। द्वितीय विवाह उसी स्थिति में किया जाता था जबकि पहली पत्नी बांझ होती थी और उससे वंश परिवार चलने में बाधा आती थी। मुसलमान लोग कुरान के अनुसार चार विवाह कर सकते थे। परन्तु निम्न र्ग के मुसलमानों में भी एक विवाह का ही प्रचलन था। अकबर ने एक आदेश भी इस संबंध में जारी किया था कि पहली पत्नी के बांझ होने पर ही दूसरा विवाह किया जा सकता है। टामस ने लिखा है, 'शरह के अनुसार चार विवाह कर सकता है और तलाक भी दे सकता है, पर भारत के लोग प्रायः एक ही विवाह करते हैं।' हिन्दू और मुसलमानों में बाल–विवाह प्रचलित था। यह प्रथा मुसलमानों में अधिक थी।

मध्ययुग में धनवान या शासक वर्ग मनोरंजन के अनेक साधन अपनाते थे। परन्तु गरीब व्यक्ति अधिकतर उन शासक लोगों के मनोरंजन के साधन जुटाने में ही व्यस्त रहते थे। उदाहरण के लिए शेर के शिकार के समय ढोल पीटने के लिए पांच हजार व्यक्ति तक नियुक्त कर दिए जाते थे जो चालीस कोस तक घेरा डालकर बजाते थे। इसके अलावा पक्षियों का शिकार गरीब भी किया करते थे। धनवान लोग बन्दूक से चिड़ियां मारते थे और गरीब लोग तीरकमान से। टोरी के अनुसार इनके कमान भैंस के सींगों तथा तीर मुश्कबेंत के बने होते थे। बड़े लोग मछली शौक के लिए पकड़ते थे और गरीब मछुए जीविका–निर्वाह के लिए मछली पकड़ते थे। मछली पकड़ने से मनोरंजन की प्राप्ति गौण थी।[10]

निम्न वर्ग के लोग मनोरंजन के लिए पशुओं की दौड़ तथा पशु–युद्धों का भी आयोजन करते थे। ग्रामों में कृषक आदि बैलों की दौड़ का आयोजन करते थे। शासक शेर, हाथी आदि के युद्ध आयोति करा सकते थे, परन्तु जनसामान्य तो कुत्ते, मुर्गे, मैंढें, तीतर आदि के युद्ध कराकर ही मनोरंजन कर लेते थे। ताश का खेल गरीब–अमीर सभी प्रकार के लोग खेलते थे। त्यौहारों पर अमीर–गरीब सभी उत्साह, उमंग का भाव परिलक्षित होता था। हिन्दु लोग होली, दीवाली, दशहरा, रक्षाबन्धन, शिवरात्रि आदि त्यौहार मनाते थे और मुसलमान लोग ईदुलजुहा, नौरोज आदि। इन त्यौहारों पर मकानों की सफाई की जाती थी और उत्सव आयोजित किए आते थे। नौरोज त्यौहार पर बादशाह का तुलादान होता था। राजा के भार के बराबर की वस्तुएं गरीबों में बांटी जाती थीं जिन्हें प्रापत कर वे खुश होते थे।[11]

निष्कर्ष

इस हम अध्ययन के आधार पर हम कह सकते हैं कि सामान्य लोगों की आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी। ये लोग मध्यम वर्ग के व्यक्तियों की भांति उत्तम कोटि का भोजन नहीं कर पाते थे। बालविवाह प्रचलित थे तथा वे एक विवाह करते थे। उनके त्यौहारों और मनोरंजन के साधनों पर बहुत कम खर्च होता था। साधारण व्यक्तियों के लिए शिक्षा की उचित व्यवस्था नहीं थी। निम्न वर्ग या जनसाधारण एक तरह से शासक वर्ग की सेवा के लिए था। उसे शासक वर्ग की कृपा पर निर्भर रहना पड़ता था।

सन्दर्भ

1. कहुसैन, यूसुफ, गलीम्पस ऑफ इण्डियन मीडिवल कल्चर, बम्बई, 1954, पृ. 127
2. पेलसर्ट, पृ. 103
3. श्रीवास्तव, ए.एल., मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, आगरा, 1965, पृ. 103
4. परमात्माशरण, मध्यकालीन भारत, नन्दकिशोर एवं ब्रदर्स, बनारस, 1950, पृ. 139
5. बर्नियर, ट्रेवल्स इन द मुग़ल एम्पायर, पृ. 255–56
6. श्रीवास्तव, ए.एल., दिल्ली सल्तनत, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, 1965, प1. 87
7. बर्नी, जिआऊद्दीन, तारीख–ए–फिरोजशाही, इन एच.एम. इलियट एण्ड जोहन डाउनसन अनुवादित, द हिस्ट्री ऑफ इण्डिया एज टोल्ड बाई इटस आऊन हिस्टोरियन, भाग–3, नई दिल्ली, 2003, 1997
8. अशरफ, के.एम., लाईफ एण्ड कंडीशन, दि पीपुल ऑफ हिन्दुस्तान, दिल्ली, 1959, पृ. 187
9. अल्लाम अब्दुला युसूफ अली, मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, पृ. 88
10. श्रीवास्तव, ए.एल., मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ. 128
11. अल्लाम अब्दुला युसुफ अली, मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति,पृ. 197